नोट -

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण प्रथमवर्ष (उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा XI समकक्ष)					
बृहदारण्यक अध्याय 1, 2, 3 । रुद्राष्टाध्यायी (पदपाठ एवं क्रमपाठ) । याजुषज्योतिष					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**मन्त्र संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1	प्रथम माह	बृहदारण्यक अध्याय 1 (ब्राह्मण 1-2)	64	10	1. गतवर्ष की सन्था पद्धति के अनुसार ही 'बृहदारण्यक' तथा 'याजुषज्योतिष' का कण्ठस्थीकरण करें। 2. पदपाठ मंत्रों के कण्ठस्थीकरण के लिये सम्पूर्ण मन्त्र की न्यूनतम 8 सन्था करें। 3. क्रमपाठ मंत्रों के कण्ठस्थीकरण के लिये सम्पूर्ण मन्त्र की न्यूनतम 5 सन्था करें। 4. सन्था पद्धति से प्रत्येक विषय कण्ठस्थ होने के उपरान्त विद्यार्थी वह विषय गुरु जी को सुनायें। 5. सम्पूर्ण संहिता की भागशः 4 दिनों में आवृत्ति करें। उदाहरण प्रथमदिन 1-19 अध्याय द्वितीयदिन 11-17 अध्याय तृतीयदिन 18-25 अध्याय चतुर्थदिन 26-40 अध्याय एक माह में न्यूनतम 5 आवृत्ति अनिवार्य है।
2	द्वितीय माह	बृहदारण्यक अध्याय 1 (ब्राह्मण 3-4) बृहदारण्यक अध्याय 2 (ब्राह्मण 1)	60	10	
3	तृतीय माह	बृहदारण्यक अध्याय 2 ब्राह्मण 2-5	55	10	
4	चतुर्थ माह	बृहदारण्यक अध्याय 3 (ब्राह्मण 1-7)	62	10	
5	पञ्चम माह	बृहदारण्यक अध्याय 3 (ब्राह्मण 8-11)	71	10	
6	षष्ठ माह	रुद्राष्टाध्यायी पदपाठ, अध्याय 1, 2, 3, 4 सम्पूर्ण, अध्याय 5 (अनुवाक 1-3)	88	10	
7	सप्तम माह	रुद्राष्टाध्यायी पदपाठ, अध्याय 5 (अनुवाक 4-9), अध्याय 6, 7, 8 सम्पूर्ण	94	10	
8	अष्टम माह	रुद्राष्टाध्यायी क्रमपाठ, अध्याय 1, 2, 3, 4 सम्पूर्ण, अध्याय 5 (अनुवाक 1-3)	88	10	
9	नवम माह	रुद्राष्टाध्यायी क्रमपाठ, अध्याय 5 (अनुवाक 4-9), अध्याय 6, 7, 8 सम्पूर्ण	94	10	
10	दशम माह	याजुषज्योतिष		10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			312 कंडिका 182 पद, क्रमपाठ	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण द्वितीयवर्ष (उत्तरमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा XII समकक्ष)					
बृहदारण्यक अध्याय 4, 5, 6 । निघण्टु अध्याय 1, 2, 3, 4, 5 । पिङ्गलच्छन्द । अष्टविकृतिपाठाभ्यास					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**मन्त्र संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1	प्रथम माह	बृहदारण्यक अध्याय 4 (ब्राह्मण 1-2)	75	10	1. गतवर्ष की सन्था पद्धति के अनुसार ही बृहदारण्यक, निघण्टु तथा छन्द का कण्ठस्थीकरण करें। 2. सन्था पद्धति से प्रत्येक विषय कण्ठस्थ होने के उपरान्त विद्यार्थी वह विषय गुरु जी को सुनायें। 3. सम्पूर्ण संहिता की भागशः 4 दिनों में आवृत्ति करें। उदाहरण प्रथमदिन 1-19 अध्याय द्वितीयदिन 11-17 अध्याय तृतीयदिन 18-25 अध्याय चतुर्थदिन 26-40 अध्याय एक माह में न्यूनतम 5 आवृत्ति अनिवार्य है। 4. विकृतिमन्त्रों का कण्ठस्थीकरण विशेषज्ञ वैदिकों के मार्गदर्शनानुसार करें।
2	द्वितीय माह	बृहदारण्यक अध्याय 4 (ब्राह्मण 3) बृहदारण्यक अध्याय 5 (ब्राह्मण 1-10)	45	10	
3	तृतीय माह	बृहदारण्यक अध्याय 5 (ब्राह्मण 11-15) बृहदारण्यक अध्याय 6 (ब्राह्मण 1-2)	55	10	
4	चतुर्थ माह	बृहदारण्यक अध्याय 6 (ब्राह्मण 3-4)	55	10	
5	पञ्चम माह	निघण्टु अध्याय 1		10	
6	षष्ठ माह	निघण्टु अध्याय 2		10	
7	सप्तम माह	निघण्टु अध्याय 3		10	
8	अष्टम माह	निघण्टु अध्याय 4, 5		10	
9	नवम माह	पिंगलच्छन्द सम्पूर्ण		10	
10	दशम माह	अष्टविकृतिपाठाभ्यास 1. जटा - यज्ञाग्रतः, यैनकर्माणि 2. माला - यत्प्रज्ञानम्, यैनेदम् 3. शिखा - यस्मिन्नृचः, सुषारथिः 4. रेखा - शङ्गवेपशुपतये, शम्भवाय 5. ध्वज - नमस्तेरुद्र, व्वय६सोम 6. दंड - यज्ञेनयज्ञम्, त्र्यम्बकम् 7. रथ - स्वस्तिनः, व्व्रतेनदीक्षाम् 8. घन - श्रीश्चते, तच्चक्षुः		10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			230 कंडिका	100 अंक	